1996-97 and 1997-98 and for the current financial year. In order to increase the export of handicrafts including handknotted carpets, the steps taken included: Organisation of buyer-sellers meets, sponsoring of sales-cum-study teams abroad, participation in international fairs and exhibitions, overseas publicity and publication of catalogues, conducting of workshop and seminars and organisation of International Handicrafts and Gifts Fair and Indian Carpet Trade Fair at New Delhi annually.

Statement

Exports of handicrafts including handknotted carpets to different major countries during 1992-93 and 1993-94

Sl. No.	Name of the country	Rs. in crores		US million Dollors	
		1992-93	1993-94	1992-93	193-94
1.	Australia	43.63	59.65	15.28	19.02
2.	Canada	79.72	109.96	27.92	35.06
3.	France	90.26	119.68	31.61	38.16
4	Germany	556.78	807.95	195 02	257.60
5.	Italy	67.41	107.51	23.61	34.28
6.	Japan	77.53	113.76	27.16	36.27
7.	Netherlands	61.64	91.19	21.59	29.08
8.	Saudi-Arabia	54.50	78.22	19.09	24.94
9.	Switzerland	65.16	85.70	22.82	27.31
10.	U.S.A.	783.29	1031.16	274 36	344.71
11.	U.K.	207.70	259.88	72.75	82.36
12.	Other Countries	346.38	445.54	119.82	142.06
	TOTAL :	2404.00	3360.20	842.03	1071 3

मध्य प्रदेश में शहतूत का उत्पादन

3482. श्री अजीत जोगी :
श्री मूलचन्द मीणा :

क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) मध्य प्रदेश में मुख्यतः किन-किन स्थानों पर शहतूत का उत्पादन किया जाता है ;

(ख) सरकार ने मध्य प्रदेश में, विशेषकर जनजातीय क्षेत्रों में शहतूत का उत्पादन बढ़ाने के लिए क्या प्रोत्साहन दिए हैं ;

(ग) गत तीन वर्षों और चालू वित्तीय वर्ष के दौरान शहतूत के उत्पादन के लिए निर्धारित लक्ष्यों का ब्यौरा क्या है ; और

(घ) इस संबंध में अब तक कितनी उपलब्धि हासिल की जा चुकी है ?

वस्त्र मंत्री श्री जी० वेंकट स्वामी : (क) मध्य प्रदेश में मुख्यतः इन्दौर, होशंगाबाद, धार, सरगुजा, बस्तर, बिलासपुर और जगदलपुर जिलों में शहतूत का उत्पादन होता है।

(ख) मध्यप्रदेश में शहतूत की पैदावार के विकास के लिए केन्द्रीय रेशम बोर्ड कलमों और परिवहन प्रभार की लागत पर 50 प्र.श. की आर्थिक सहायता से सुधरी हुई किस्म की शहतूती बीज कलमों की आपूर्ति कर रहा है।

(ग) और (घ) पिछले तीन वर्षों तथा चालू वित्तीय वर्ष के दौरान उपलब्धि की तुलना में शहतूती रेशम के उत्पादन के लिए निम्नोक्तानुसार लक्ष्य निर्धारित किए गए है :—

(मैट्रिक टन में)

वर्ष	उत्पादन लक्ष्य	उपलब्धि
1992–93	7	4
1993–94	8	6
1994–95	8	3
1995–96	8	(दिसम्बर 94 तक उपलब्ध नहीं)

Delegation to Mexino and Brazil for Textile Exports

3483. SHRI T. VENKATRAM REDDY: Will the Minister of TEXTILES be pleased to state:

(a) whether he had led a delegation to Mexico and Brazil to explore markets for Indian textiles;

(b) if so, the response from them; and

(c) the overall achievement of the visit?

THE MINISTER OF ETXTILES (SHRI G. VENKAT SWAMY): (a) Yes, Sir. I had led a textile delegation to Mexico and Brazil in September 1994 for promoting exporte of textiles and readymade garments.

(b) The response from the importers of both the countries was very encouraging.

(c) The overall achievement of the visit was to hignten awareness among local importers of the vest range of Indian textiles and garments, whics is expected to give a fillip to our exports to these countries.

मध्य प्रदेश से हथकरघा और हस्तशिल्प की वस्तुओं का निर्यात

3484. **श्री दिलीप सिंह जूदेव** : क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि

(क) पिछले तीन वर्षों के दौरान मध्य प्रदेश से वर्ष-वार कितने मूल्य की हथकरघा और हस्तशिल्प वस्तुओं का किन-किन देशों को निर्यात किया गया है ;

(ख) क्या इस राज्य से इन मदों के निर्यात की और अधिक संभावनायें है ; और

(ग) यदि हां, तो 1994–95 और 1995–96 के वर्षों के दौरान राज्य से इन मदों के निर्यात को प्रोत्साहन देने हेतु सरकार द्वारा उठाए जाने वाले कदमों का ब्यौरा क्या है ?

वस्त्र मंत्री (श्री जी० वेंकट स्वामी) : (क) ई.यू. के सदस्य देश यू.एस.ए. कनाडा तथा जापान भारत के हथकरघा तथा हस्तशिल्प उत्पादों के प्रमुख आयातक हैं। तथापि राज्यवार निर्यात आंकड़े नहीं रखे जाते हैं ;

(ख) मध्यप्रदेश के हथकरघा तथा हस्तशिल्प उत्पादों के निर्यातों को बढ़ाने की कुछ सम्भावनाएं हैं।

(ग) सरकार मध्य प्रदेश सहित हथकरघा तथा हस्तशिल्पों के निर्यातों को बढ़ाने के लिए अनेक उपाय कर रही है जैसे कि क्रेता-विक्रेता बैठकों का प्रायोजन करना प्रमुख बाजारों में मेलों में भाग लेना विदेश व्यापार पत्रिकाओं में विज्ञापन देना उत्पाद विकास तथा उपयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से गुणवत्ता उन्नयन करना।